



नवगण शिक्षा संस्था द्वारा संचालित
वसंतदादा पाटील कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय, पाटोदा जिला बीड महाराष्ट्र
कर्मचारी कल्याण समिति और हिंदी विभाग द्वारा आयोजित
उद्बोधन व्याख्यानमाला
'संत कबीर के साहित्य में प्रासंगिकता'
१ सितम्बर २०२३

प्रति,
मा. प्रधानाचार्य,
वसंतदादा पाटील महाविद्यालय,
पाटोदा

नवगण शिक्षा संस्था द्वारा संचालित वसंतदादा पाटील कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय के कर्मचारी कल्याण समिति और हिंदी विभाग के संयुक्त प्रावधान से उद्बोधन व्याख्यान का आयोजन १ सितम्बर २०२३ को किया गया।

महाविद्यालय के हिन्दी विभाग द्वारा 'संत कबीर के साहित्य की प्रासंगिकता' विषय पर इस विचारोत्तेजक अतिथि व्याख्यान का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रधानाचार्य प्रोफेसर आबासाहेब हांगे ने की। उपप्रधानाचार्य प्रोफेसर किशोर मचाले, उपप्रधानाचार्य डॉ. गणेश पचकोरे, स्नातकोत्तर विभाग निदेशक डॉ. मनोजकुमार प्रकाश, कनिष्ठ विभाग के उपप्रधानाचार्य श्रीमान नामदेव चांगन, पर्यवेक्षक श्रीमान अनिल जोगदंड आदि मंच पर मौजूद थे।

व्याख्यान कार्यक्रम का प्रास्ताविक एवं व्याख्याता का परिचय हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ. बलिराम राख द्वारा किया गया।

प्रोफेसर सय्यद शौकत ने संत कबीर के साहित्य की प्रासंगिकता बताते हुए कहा कि कबीर ने अपने दोहों के माध्यम से मूर्तिपूजा का विरोध किया और अंधविश्वास पर प्रहार किया। वे धर्म में रीति-रिवाजों और अनावश्यक चीजों के विरोधी थे। कबीर ने जाति और भेदभाव की प्रथाओं का विरोध किया। कबीर के अनुसार हर मनुष्य में ईश्वर है लेकिन मनुष्य ईश्वर को कहीं और खोजता रहता है। उनके विचार मानवतावादी थे। कोई छोटा या बड़ा नहीं होता इसलिए मनुष्य की उपयोगिता महत्वपूर्ण है। दूसरों के दोषों को नज़रअंदाज करें और तुच्छ से तुच्छ व्यक्ति को भी बुरा

न कहें। संत कबीर ने कथनी और करनी में भिन्नता रखने वाले लोगों पर जमकर प्रहार किया। पंद्रहवीं शताब्दी में लिखा गया संत कबीर का साहित्य मानवता की शिक्षा देता है। समय के महत्व को समझाते हुए कबीर कहते हैं कि जो कल करना चाहिए वह आज करना चाहिए, जो आज करना चाहिए वह तुरंत करना चाहिए, एक क्षण में सब कुछ नष्ट हो सकता है, मनुष्य को इससे कहाँ तक बचना चाहिए? प्रोफेसर सय्यद शौकत इन्होंने अंत में कहा कि एक अज्ञानी गुरु किसी अज्ञानी शिष्य को ज्ञानी नहीं बना सकता। गुरु का कार्य एक आदर्श पीढ़ी का निर्माण करना है।

अध्यक्षीय समापन में प्राचार्य प्रोफेसर आबासाहेब हांगे ने कहा कि संत कबीर के विचार के अनुसार मन की प्रसन्नता ही सर्वोत्तम सम्पत्ति है। नकारात्मक विचार जीवन को नष्ट कर देते हैं इसलिए मन को हर पल प्रसन्न रखना चाहिए।

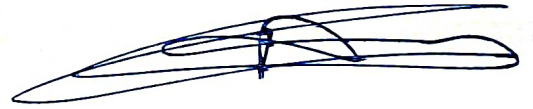
कार्यक्रम का संचालन डॉ. दिलीप गिन्हे द्वारा किया गया। व्याख्यान में कनिष्ठ और वरिष्ठ विभागों के लगभग ४६ अध्यापकों ने भाग लिया।



कर्मचारी कल्याण समिति



हिंदी विभागाध्यक्ष



Principal
Vasantdada Patil Arts, Comm.
& Sci. College Patoda, Dist. Beed



नवगण शिक्षा संस्था द्वारा संचालित

वसंतदादा पाटील कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय, पाटोदा जिला बीड महाराष्ट्र
कर्मचारी कल्याण समिति और हिंदी विभाग द्वारा आयोजित

उद्बोधन व्याख्यानमाला

'संत कबीर के साहित्य में प्रासंगिकता'

१ सितम्बर २०२३

प्रति,

मा. प्रधानाचार्य,

वसंतदादा पाटील महाविद्यालय,

पाटोदा

नवगण शिक्षा संस्था द्वारा संचालित वसंतदादा पाटील कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय के कर्मचारी कल्याण समिति और हिंदी विभाग के संयुक्त प्रावधान से उद्बोधन व्याख्यान का आयोजन १ सितम्बर २०२३ को किया गया।

महाविद्यालय के हिन्दी विभाग द्वारा 'संत कबीर के साहित्य की प्रासंगिकता' विषय पर इस विचारोत्तेजक अतिथि व्याख्यान का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रधानाचार्य प्रोफेसर आबासाहेब हांगे ने की। उपप्रधानाचार्य प्रोफेसर किशोर मचाले, उपप्रधानाचार्य डॉ. गणेश पचकोरे, स्नातकोत्तर विभाग निदेशक डॉ. मनोजकुमार प्रकाश, कनिष्ठ विभाग के उपप्रधानाचार्य श्रीमान नामदेव चांगन, पर्यवेक्षक श्रीमान अनिल जोगदंड आदि मंच पर मौजूद थे।

व्याख्यान कार्यक्रम का प्रास्ताविक एवं व्याख्याता का परिचय हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ. बलिराम राख द्वारा किया गया।

प्रोफेसर सय्यद शौकत ने संत कबीर के साहित्य की प्रासंगिकता बताते हुए कहा कि कबीर ने अपने दोहों के माध्यम से मूर्तिपूजा का विरोध किया और अंधविश्वास पर प्रहार किया। वे धर्म में रीति-रिवाजों और अनावश्यक चीजों के विरोधी थे। कबीर ने जाति और भेदभाव की प्रथाओं का विरोध किया। कबीर के अनुसार हर मनुष्य में ईश्वर है लेकिन मनुष्य ईश्वर को कहीं और खोजता रहता है। उनके विचार मानवतावादी थे। कोई छोटा या बड़ा नहीं होता इसलिए मनुष्य की उपयोगिता महत्वपूर्ण है। दूसरों के दोषों को नज़रअंदाज करें और तुच्छ से तुच्छ व्यक्ति को भी बुरा

न कहें। संत कबीर ने कथनी और करनी में भिन्नता रखने वाले लोगों पर जमकर प्रहार किया। पंद्रहवीं शताब्दी में लिखा गया संत कबीर का साहित्य मानवता की शिक्षा देता है। समय के महत्व को समझाते हुए कबीर कहते हैं कि जो कल करना चाहिए वह आज करना चाहिए, जो आज करना चाहिए वह तुरंत करना चाहिए, एक क्षण में सब कुछ नष्ट हो सकता है, मनुष्य को इससे कहाँ तक बचना चाहिए? प्रोफेसर सय्यद शौकत इन्होंने अंत में कहा कि एक अज्ञानी गुरु किसी अज्ञानी शिष्य को ज्ञानी नहीं बना सकता। गुरु का कार्य एक आदर्श पीढ़ी का निर्माण करना है।

अध्यक्षीय समापन में प्राचार्य प्रोफेसर आबासाहेब हांगे ने कहा कि संत कबीर के विचार के अनुसार मन की प्रसन्नता ही सर्वोत्तम सम्पत्ति है। नकारात्मक विचार जीवन को नष्ट कर देते हैं इसलिए मन को हर पल प्रसन्न रखना चाहिए।

कार्यक्रम का संचालन डॉ. दिलीप गिन्हे द्वारा किया गया। व्याख्यान में कनिष्ठ और वरिष्ठ विभागों के लगभग ४६ अध्यापकों ने भाग लिया।

कर्मचारी कल्याण समिति

हिंदी विभागाध्यक्ष

छायाचित्र



अतिथि व्याख्याता प्रोफेसर सय्यद शौकत का स्वागत करते हुए प्रधानाचार्य प्रोफेसर आबासाहेब हांगे



कार्यक्रम की प्रस्तावना एवं अतिथि व्याख्याता का परिचय देते हुए
हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ. बलिराम राख



व्याख्यान में मार्गदर्शन करते हुए प्रोफेसर सय्यद शौकत



व्याख्यान में मार्गदर्शन करते हुए प्रोफेसर सय्यद शौकत



श्रोता अध्यापकगण



श्रोता अध्यापकगण

उत्तम पिढी निर्माण करणे हेच गुरुचे कार्य-प्रोफेसर सय्यद शौकत

प्रतिनिधी। पाटोदा अज्ञानी गुरु अज्ञानी शिष्याला ज्ञानी बनवू शकत नाही. एक आदर्श पिढी घडविणे हेच गुरुचे कार्य असते असे प्रतिपादन प्रोफेसर सय्यद शौकत यांनी केले. येथील नवगण शिक्षण संस्था संचालित वसंतदादा पाटील कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालयात कर्मचारी कल्याण समितीच्या वतीने शुक्रवारी आयोजित उद्बोधन व्याख्यानमालेत ते प्रमुख वक्ते म्हणून बोलत होते.

महाविद्यालयाच्या हिंदी विभागामार्फत 'संत कबीर के साहित्य की प्रासंगिकता' या

विषयावर उद्बोधनपर अतिथी व्याख्यान आयोजित करण्यात आले होते. कार्यक्रमाच्या अध्यक्षस्थानी प्राचार्य प्रोफेसर आबासाहेब हांगे होते. व्यासपीठावर उपप्राचार्य प्रोफेसर किशोर मचाले, उपप्राचार्य डॉ. गणेश पाचकोरे, पदव्युत्तर विभाग संचालक डॉ. मनोजकुमार प्रकाश, कनिष्ठ विभागाचे उपप्राचार्य प्रा. नामदेव चांगण, पर्यवेक्षक प्रा. अनिल जोगदंड आदि उपस्थित होते.

व्याख्यान कार्यक्रमामाचे प्रास्ताविक व व्याख्यात्यांचा परिचय हिंदी विभाग प्रमुख डॉ. बळीराम राख यांनी करून दिला.



संत कबीरांच्या साहित्याची प्रासंगिकता स्पष्ट करताना प्रोफेसर सय्यद शौकत पुढे म्हणाले की, कबीरांनी त्यांच्या दोह्यांमधून मूर्तीपूजेस विरोध

केला व अंधविश्वासावर प्रहार केला. धर्मातील कर्मकांड व अनावश्यक बाबींना त्यांचा विरोध होता. जात-पात व भेदभाव अशा प्रथांना कबीरांनी

विरोध केला. कबीरांच्या मते प्रत्येक माणसाच्या ठायी ईश्वर आहे परंतु माणूस ईश्वराचा शोध इतरत्र करत राहतो. त्यांचे विचार मानवतावादी होते. कोणीही लहान व मोठा नसतो तर माणसाची उपयोगिता महत्वाची असते. इतरांच्या दोषांकडे दुर्लक्ष करावे आणि तुच्छ व्यक्तीला सुद्धा वाईट संबोधू नये. वाणी आणि कृतीमध्ये तफावत असणाऱ्या लोकांवर संत कबीरांनी ताशेरे ओढले. पंधराव्या शतकात निर्मित संत कबीरांचे साहित्य हे माणसाला माणूसपण शिकवणारे आहे. वेळेचे महत्व स्पष्ट करताना कबीर

म्हणतात जे कार्य उद्या करावयाचे ते आज करावे, जे आज करावयाचे ते तत्क्षणी करावे, एका क्षणात सर्व नष्ट होऊ शकते, माणसाने कुठपर्यंत टाळाटाळ करावी? अध्यक्षीय समारोपात प्राचार्य प्रोफेसर आबासाहेब हांगे म्हणाले की, संत कबीरांच्या विचारानुसार मनाची प्रसन्नता ही सर्वश्रेष्ठ मिळकत आहे. नकारात्मक विचार जीवनाचा विनाश करतात म्हणून प्रत्येक क्षणी मन प्रसन्न ठेवले पाहिजे. कार्यक्रमाचे सूत्रसंचालन डॉ. दिलीप गिरे यांनी केले. उद्बोधन व्याख्यानास कनिष्ठ व वरिष्ठ विभागाचे प्राध्यापक उपस्थित होते.

उत्तम पिढी निर्माण करणे हेच गुरुचे कार्य - प्रोफेसर सय्यद शौकत

पाटोदा। वार्ताहर

अज्ञानी गुरु अज्ञानी शिष्याला ज्ञानी बनवू शकत नाही. एक आदर्श पिढी घडविणे हेच गुरुचे कार्य असते असे प्रतिपादन प्रोफेसर सय्यद शौकत यांनी केले. येथील नवगण शिक्षण संस्था संचालित वसंतदादा पाटील कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालयात कर्मचारी कल्याण समितीच्या वतीने शुक्रवारी आयोजित उद्बोधन व्याख्यानमालेत ते प्रमुख वक्ते म्हणून बोलत होते.

महाविद्यालयाच्या हिंदी विभागामार्फत 'संत कबीर के साहित्य की प्रासंगिकता' या विषयावर उद्बोधनपर अतिथी व्याख्यान आयोजित करण्यात आले होते. कार्यक्रमाच्या अध्यक्षस्थानी प्राचार्य प्रोफेसर आबासाहेब हांगे होते. व्यासपीठावर उपप्राचार्य प्रोफेसर किशोर मचाले, उपप्राचार्य डॉ. गणेश पाचकोरे, पदव्युत्तर विभाग संचालक डॉ. मनोजकुमार प्रकाश, कनिष्ठ विभागाचे उपप्राचार्य प्रा. नामदेव चांगण, पर्यवेक्षक प्रा. अनिल



जोगदंड आदि उपस्थित होते. व्याख्यान कार्यक्रमाचे प्रास्ताविक व व्याख्यात्यांचा परिचय हिंदी विभाग प्रमुख डॉ. बळीराम राख यांनी करून दिला.

संत कबीरांच्या साहित्याची प्रासंगिकता स्पष्ट करताना प्रोफेसर सय्यद शौकत पुढे म्हणाले की, कबीरांनी त्यांच्या दोह्यांमधून मूर्तीपूजेस विरोध केला व

अंधविश्वासावर प्रहार केला. धर्मातील कर्मकांड व अनावश्यक बाबींना त्यांचा विरोध होता. जात-पात व भेदभाव अशा प्रथांना कबीरांनी विरोध केला. कबीरांच्या मते प्रत्येक माणसाच्या ठायी ईश्वर आहे परंतु माणूस ईश्वराचा शोध इतरत्र करत राहतो. त्यांचे विचार मानवतावादी होते. कोणीही लहान व मोठा नसतो तर माणसाची

उपयोगिता महत्वाची असते. इतरांच्या दोषांकडे दुर्लक्ष करावे आणि तुच्छ व्यक्तीला सुद्धा वाईट संबोधू नये. वाणी आणि कृतीमध्ये तफावत असणाऱ्या लोकांवर संत कबीरांनी ताशेरे ओढले. पंधराव्या शतकात निर्मित संत कबीरांचे साहित्य हे माणसाला माणूसपण शिकवणारे आहे. वेळेचे महत्व स्पष्ट करताना कबीर म्हणतात जे कार्य उद्या करावयाचे ते आज करावे, जे आज करावयाचे ते तत्क्षणी करावे, एका क्षणात सर्व नष्ट होऊ शकते, माणसाने कुठपर्यंत टाळाटाळ करावी? अध्यक्षीय समारोपात प्राचार्य प्रोफेसर आबासाहेब हांगे म्हणाले की, संत कबीरांच्या विचारानुसार मनाची प्रसन्नता ही सर्वश्रेष्ठ मिळकत आहे. नकारात्मक विचार जीवनाचा विनाश करतात म्हणून प्रत्येक क्षणी मन प्रसन्न ठेवले पाहिजे. कार्यक्रमाचे सूत्रसंचालन डॉ. दिलीप गिरे यांनी केले. उद्बोधन व्याख्यानास कनिष्ठ व वरिष्ठ विभागाचे प्राध्यापक उपस्थित होते.

उत्तम पिढी निर्माण करणे हेच गुरुचे कार्य: शौकत



पाटोदा/प्रतिनिधी: अज्ञानी गुरु अज्ञानी शिष्याला ज्ञानी बनवू शकत नाही. एक आदर्श पिढी घडविणे हेच गुरुचे कार्य असते, असे प्रतिपादन सय्यद शौकत यांनी केले. येथील नवगण शिक्षण संस्था संचालित वसंतदादा पाटील कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालयात कर्मचारी कल्याण समितीच्या वतीने शुक्रवारी आयोजित उद्बोधन व्याख्यानमालेत ते प्रमुख वक्ते म्हणून बोलत होते.

महाविद्यालयाच्या हिंदी विभागामार्फत 'संत कबीर के साहित्य की प्रासंगिकता' या विषयावर उद्बोधनपर अतिथी व्याख्यान आयोजित करण्यात आले होते. कार्यक्रमाच्या अध्यक्षस्थानी प्राचार्य आबासाहेब हांगे होते. व्यासपीठावर उपप्राचार्य किशोर मचाले, उपप्राचार्य डॉ.गणेश पाचकोरे, पदव्युत्तर विभाग संचालक डॉ.मनोजकुमार प्रकाश, कनिष्ठ विभागाचे उपप्राचार्य प्रा.नामदेव चांगण, पर्यवेक्षक प्रा.अनिल जोगदंड आदि

उपस्थित होते.व्याख्यान कार्यक्रमाचे प्रास्ताविक व व्याख्यात्यांचा परिचय हिंदी विभाग प्रमुख डॉ.बळीराम राख यांनी करून दिला.संत कबीरांच्या साहित्याची प्रासंगिकता स्पष्ट करताना सय्यद शौकत पुढे म्हणाले, कबीरांनी त्यांच्या दोह्यांमधून मूर्तीपूजेस विरोध केला व अंधविश्वासावर प्रहार केला.

धर्मातील कर्मकांड व अनावश्यक बाबींना त्यांचा विरोध होता. जात-पात व भेदभाव अशा प्रथांना कबीरांनी विरोध केला. कबीरांच्या मते प्रत्येक माणसाच्या ठायी ईश्वर आहे परंतु माणूस ईश्वराचा शोध इतरत्र करत राहतो. त्यांचे विचार मानवतावादी होते. कोणीही लहान व मोठा नसतो तर माणसाची उपयोगिता महत्वाची असते. इतरांच्या दोषांकडे दुर्लक्ष करावे आणि तुच्छ व्यक्तीला सुद्धा वाईट संबोधू नये, असेही ते म्हणाले. कार्यक्रमाचे सूत्रसंचालन डॉ.दिलीप गिऱ्हे यांनी केले.